करौंदा है स्वादिष्ट फल

पी. ए. साबले*, मनीष शर्मा*, किशन वाघेला*, जी. एस. पटेल* और **पीयूष वर्मा***

करौंदे का वानस्पतिक नाम *कैरिसा कारंडास* है और यह एपोकिनेसी परिवार से संबंधित है। इसका वृक्ष झाड़ीनुमा और कांटेदार होता है। यह मुनाफा देने के साथ-साथ जंगली पशुओं से फसल को सुरक्षा भी प्रदान करता है। करौंदे को किसी भी फसल या बागों के चारों तरफ जीवंत बाढ़ के रूप में लगाया जा सकता है। इसे जंगलों और खेत खलिहानों के आसपास कंटीली झाड़ियों के रूप में उगता हुआ भी देखा जाता है। इसके वृक्ष पहाड़ी क्षेत्रों में ज्यादा होते हैं। देश में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि अन्य क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर इसके वृक्ष देखने को मिलते हैं।

करौंदा के कच्चे फल

अधपके फल

स्वादिष्ट परिपक्व फल

करौंदे के वृक्षों की ऊंचाई सामान्यत: 6 से 7 फुट तक होती है। वृक्षों में मजबूत कांटे होते हैं। फूल सफेद रंग के तथा इसके फल गोल, छोटे और हरे रंग के होते हैं। कच्चे फल को काटने पर इसमें से सफेद द्रव्य निकलता है। ये स्वाद में खट्टे लगते हैं। पकते समय इसके फल लाल व बैंगनी रंग के दिखाई देते हैं और पकने पर ये काले रंग के हो जाते हैं।

इसके फल में चार बीज पाए जाते हैं। पके फल खास सुगंध के साथ स्वाद में मीठे व अम्लीय लगते हैं। इसके पके फल को नमक के साथ खाने का मजा कुछ और ही होता है।

मृदा एवं जलवायु

करौंदे को अच्छी जल निकासी वाली किसी भी प्रकार की भूमि में लगाया जा सकता है। इसे बलुई, बंजर और पथरीली मृदा में भी लगाया जा सकता है। यह वृक्ष पूरे देश में शुष्क, उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु वाले क्षेत्रों में आसानी से लगाया जाता है। इसमें शुष्क जलवायु व क्षारीयता सहने की क्षमता होती है। खासकर परती भूमि के लिए करौंदा बहुत ही फायदेमंद वृक्ष है। ठंडे प्रदेश में इसकी वृद्धि अच्छी नहीं होती है। जंगलों में इसकी वृद्धि बारिश में ही होती है।

प्रवर्धन एवं रोपाई

इसका प्रवर्धन प्राय: बीज द्वारा किया जाता है। बरसात के मौसम में स्टेम कटिंग व गूटी द्वारा पौध तैयार करना उचित रहता है। इस विधि से पौधों को तैयार होने के लिए तीन महीने लगते हैं। कलम को 2500-5000 पी.पी.एम. आई.बी.ए. व एन.ए.ए. घोल से उपचारित करना चाहिए। ऐसा करने से कलम द्वारा नया पौधा जल्दी तैयार किया जा सकता है। बीजों द्वारा प्रवर्धित पौधों को खेत में लगाने के लिए एक वर्ष का समय लगता है। पके हुए फलों से ताजा बीज, अगस्त महीने में निकालकर क्यारियों अथवा काले रंग के पॉलीथिन की थैलियों में बुआई कर लेते हैं।

पौधशाला में करौंदे की पौध

रोपाई हेतु अप्रैल-मई महीने में भूमि में 1.5 × 1.5 × 1.5 फुट का गहरा गड्ढा खोदकर, उसको 2 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद व 200 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट

पोषक मान

इसके फलों में बहुतायत में पोषक तत्व पाये जाते हैं, जैसे -विटामिन "सी", लौह खनिज तत्व (39.1 मि.ग्रा. /100 ग्रा), कैल्शियम और फॉस्फोरस पाया जाता है। इस फल की वाइन में 14.5 से 15 फीसदी अल्कोहल पाया गया है। परिपक्व फलों में पेक्टिन की मात्रा अधिक होती है। इसका उपयोग जेली, जैम, स्क्वैश, सॉस, सिरप जैसे विभिन्न उत्पाद बनाने में किया जाता है। इसके अलावा अचार और चटनी में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।

*बागवानी महाविद्यालय, सरदार कृषिनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, जगुदन, महेसाणा, गुजरात

बाड़ के उद्देश्य से लगाए जाने वाले करौंदे

के मिश्रण से बरसात से पहले भर देना चाहिए। उसके पश्चात बरसात के मौसम (जुलाई-अगस्त) का समय करौंदे की रोपाई के लिए उपयुक्त होता है। तैयार पौध को बाड़ में लगाने के लिए 3 फुट व केवल फलों के उद्देश्य से लगाए जाने वाले पौधों की दूरी 3-4 मीटर रखी जाती है।

सिंचाई

एक साल तक के नए लगाए करौंदे के पौधों में गर्मी के महीने में 8 दिनों के व सर्दी के महीने में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते हैं। पहले साल में हर सिंचाई में प्रति पौधा लगभग 20 लीटर पानी देना चाहिए। दूसरे साल से सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, किंतु आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई कर सकते हैं।

खाद एवं उर्वरक

करौंदे को बहुत ज्यादा खाद एवं उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती है। पौध लगाते समय उसे 2 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद व 200 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट देना होता है। फल प्राप्त करने के उद्देश्य से लगाए गए चार साल के बाद के पौधों को प्रत्येक वर्ष अगस्त महीने में लगभग 10 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद व 100 ग्रा. यूरिया, 100 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट और 50 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश देकर सिंचाई करनी चाहिए। यूरिया की मात्रा एक साथ न देकर सुनिश्चित भागों में बांटकर देनी चाहिए। पौधों में फूल आते समय इसके बंटवारे की मात्रा निर्धारित रखना उचित माना जाता है।

कटाई और छंटाई

बाड़ लगाने के लिए शुरू से ही नियमित पौधों की कटाई और छंटाई करते रहना चाहिए। फल प्राप्त करने के उद्देश्य से लगाए गए पौधों को (रोपाई के पांचवें साल से) कटाई और छंटाई का उपयुक्त समय प्रत्येक वर्ष फलों की तुड़ाई के बाद होता है। यह मुख्यत: मई-जून में की जाती है। कटाई और छंटाई करने से बढ़वार अच्छी होती है और वृक्ष नीचे से ज्यादा फैलकर झाड़ीनुमा हो जाते हैं।

तुड़ाई व उपज

बीज द्वारा तैयार किये गए वृक्षों में फलन प्राय: 4-5 वर्षों के बाद व गूटी द्वारा तैयार कलम में रोपाई के 2-3 वर्ष बाद फल आना शुरू होता है। लगभग फरवरी महीने में करौंदे के वृक्षों में पुष्पण होता है और अप्रैल से जून महीने के बीच फल पक जाते हैं।

सब्जी एवं चटनी के लिए कच्चे फलों की तुड़ाई की जाती है। जेली बनाने के लिए अधपके फलों की तुड़ाई करें। इस समय पेक्टिन की मात्रा अधिक होती है। पूर्ण पके फलों की तुड़ाई, बीजों के लिए और स्वादिष्ट फलों के रूप में खाने के लिए करते हैं। बाड़ के लिए लगाए गए वृक्षों से लगभग 2-3 कि.ग्रा. तथा फल के उद्देश्य से लगाए गए वृक्षों से 3.5 से 5 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष औसत फल उपज मिलती है। उचित एकीकृत फसल प्रबंधन अपनाने से प्रति वृक्ष 6 से 8 कि.ग्रा. उपज प्राप्त कर सकते हैं।

करौंदे के आकर्षक रंगीन फल

पथरीली भूमि में कंटीले करौंदे पौधे

कोंकण करौंदा बोल्ड

यह किस्म डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विश्वविद्यालय, दापोली, महाराष्ट्र द्वारा चयन विधि द्वारा तैयार की है। इसके पके फल गहरे काले रंग के 12 से 16 ग्रा. के बड़े आकार के होते हैं। इस किस्म में शाखाओं पर गुच्छों में फल लगते हैं। इस फल में 92 प्रतिशत गूदा होता है और इसकी शेल्फ लाइफ 4 दिनों की होती है। इसमें विटामिन "सी" (361 मि.ग्रा. /100 ग्रा.) अधिक पाया जाता है। इस फल के बीज मुलायम होते हैं। इसलिए इसे फलों के साथ खाया जा सकता है। इसके अलावा सफेद रंग पर गहरी गुलाबी आभा लिए पंत मनोहर, सफेद रंग पर गुलाबी आभा लिए पंत सुदर्शन व हरे रंग के गहरी भूरी आभा लिए पंत स्वर्ण अन्य किस्में भी हैं।